इण्डस रिवर डेल्टा

नदी है, जबकि पद्मा, जो पूर्वी बंगाल (अर्थात् बंग्ला देश) से होकर बहती है, गंगा की प्रमुख धारा बन गयी है। इसी प्रकार आज से काफी पहले दामोदर का हुगली से संगम कोलकाता से 56 किलोमीटर आगे होता था, परन्तु अब यह संगम कोलकाता से कई किलोमीटर नीचे होता है। पहले भागीरथी की धारा सरस्वती नामक नदी से गुजरती थी। सरस्वती की धारा आजकल वर्तमान हुगली के पश्चिम में देखी जा सकती है। यह हुगली से त्रिवेणी में अलग होती थी, जो कोलकाता से 58 किलोमीटर ऊपर था तथा पुनः हुगली में संकरैल के पास मिलती थी। यह स्थान 10 किलोमीटर नीचे था। पंद्रहवीं शताब्दी तक यह एक महत्वपूर्ण नदी थी और इसके किनारे पर सतगांव नामक एक नगर था जहां पहले बंगाल की राजधानी थी। यह स्थान व्यापार का प्रमुख केंद्र हुआ करता था क्योंकि समुद्र की ओर जाने वाले सभी जलयान यहां रुकते थे। सरस्वती की धारा की दिशा बदल जाने के कारण सतगांव का महत्व समाप्त हो गया।

लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तक तिस्ता गंगा की एक सहायक नदी थी। परन्तु सन् 1787 ई. में आयी एक विनाशकारी बाढ़ के बाद तिस्ता ने अपना पुराना मार्ग छोड़ दिया तथा यह ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी बन गयी। ब्रह्मपुत्र नदी पहले मधुपुर के जंगल के पूर्व से गुज़रती थी, परन्तु अब पश्चिम में काफी आगे इसका संगम पद्मा से होता है।

मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र, ईसा बाद पाँचवीं शताब्दी तक, एक विकसित नगर था, जो आज वर्तमान पटना के नीचे दबा पड़ा है। इतिहास के ग्रंथों से पता चलता है कि पाटलिपुत्र नगर पांच नदियों के संगम पर स्थित था। ये पांच नदियां थीं : गंगा, घाघरा, गंडक, सोन तथा पुनपुन। बार-बार आयी बाढ़ के कारण यह नगर बर्बाद हो गया और मिट्टी के नीचे दब गया। वर्तमान समय में गंगा, घाघरा, गंडक, सोन तथा पुनपुन का संगम एक-दूसरे से काफी दूर-दूर स्थित है।

स्रोतः इस लेख में नदियों के बारे में जानकारी ''जियोलॉजी ऑफ इंडिया एंड बर्मा, पृष्ठ सं. 34-35, हिन्जिन बोथमूस(प्रा.) लिमिटेड, 1968 से ली गई है।

संपर्क करें :
डॉ. विजय कुमार उपाध्याय
कृष्णा एन्क्लेव, राजेन्द्र नगर
पो. : जमगोड़िया, वाया-जोधाडीह
चास, जिला-बोकारो, झारखंड
पिन कोड : 827013

जल और जीवन

पानी बहुत कीमती वस्तु, ये हम सब ने जाना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

बनी सभ्यता नदियों के तट, क्योंकि वहां था पानी,
भू-जल का जब ज्ञान नहीं था, नहीं था मानव ज्ञानी।
नदियों के पानी द्वारा ही, खेलता, खाता, पीता,
बिना प्रदूषित किए नीर को, जीवन अपना जीता।

जितनी हुई जरूरत नीर की, उतना ही ले आना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

किन्तु ज्ञान जब हुआ भू-जल का, मानव अति पर आया,
धरती मां के सीने पर, इसने आतंक मचाया।
करे छेद अनगिनत जिगर में, दर्द इसे नहीं आया,
ट्यूबवैल आदि से खींच के इसने, पानी बहुत बहाया।

ऐसे ही बर्बाद किया जल, तो पड़े बहुत पछताना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

जीते पानी, मरते पानी, पानी ही जीवन है,
नित्य कर्म बिन पानी के, करना बहुत कठिन है।
राह बने आसान, अगर पानी की करें हिफ़ाज़त,
नहीं समय से चेते तो, फिर आ जाएगी आफ़त।

इस आफ़त से बचने को, जल संचय धर्म बनाना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

इस जल से पौधे, फूल और बनी रहे फुलवारी,
करनी इसकी खूब हिफ़ाज़त, अब हम सब की बारी।
दोहन से ज्यादा संचय का, काम हमें अब करना,
ना रहे नीर अभाव धरा पर, पड़े ना दुःखड़ा रोना।

बना रहे जल-जीवन भू पर, ऐसा अलख जगाना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

एक अंत में बात कहूं मैं, सुनो ध्यान लगाकर,
जल को तुम मत करना गंदा, प्रदूषण फैलाकर।
कहे मौहर सिंह कोसेंगी पीढ़ी, उनके कोप से बचना,
सदा शुद्ध रहे धरती का जल, ऐसी रचना करना।

अगर हो गया जल दूषित तो, नहीं है कहीं ठिकाना,
जग में इसके बिना गुजारा, मुश्किल है हो पाना।

संपर्क करें :
मौहर सिंह
रा.ज.सं., रुड़की (उत्तराखण्ड)